भगति बिना भगवानु, कंहीं पातो कीनकी
समुझे को सामी चवे, नेही निर्अभिमान,
जंहिंखे डिनो सतिगुरूअ, दीखिया दरसनु दानु,
करे अमिरुत पानु, इस्थित थियो आकास जां.

भक्ति के महत्व को समझाते हुए सामी साहब कहते हैं कि भक्ति के सिवाय परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती। किसी ने भी भक्ति किये बिना भगवान को प्राप्त नहीं किया है। यह तथ्य वही सच्चा प्रेमी समझ सकता है, जिसके मन में किसी तरह का अभिमान नहीं है। ऐसे प्रेमी भक्त पर सतगुरु कृपा कर दीक्षा देते हैं। वे उस प्रेमी को प्रभु के दर्शन करने का दान देते हैं। फलस्वरूप वह अमृत का पान कर भक्ति-रस का आनंद प्राप्त करते हुए आकाश जैसा स्थिर और निर्मल बन जाता है।

अहंशून्य सेवा ही भक्ति है। जो भक्त नहीं है, वह विभक्त कहा जा सकता है। यदि हृदय में भक्ति की आर्द्रता नहीं है, तो केवल विद्वत्ता और पारायण का कोई महत्व नहीं है। नारदीय भक्ति परम प्रेम रुपा और अमृत स्वरूप मानी गयी है। वह प्राप्त हो जाने पर मनुष्य अमर हो जाता है, धन्य हो जाता है, कृतार्थ हो जाता है। भक्ति की कृपा हो जाने पर मनुष्य किसी से द्वेष नहीं करता; शोक नहीं करता। अपने सारे कर्म भगवान को अर्पण कर डालता है। कभी भगवान का विस्मरण हो जाने पर वह अति व्याकुल हो जाता है। वस्तुत: भक्ति की महिमा अनिर्वचनीय है। भक्ति करने वाला सच्चा साधक संसार को भूल जाता है। उसे अपनी देह का भी विस्मरण हो जाता है। इस प्रकार मन और बुद्धि प्रभु को समर्पित कर देना भक्ति है। भक्ति मानो मन का स्नान है। मुक्ति की शक्ति ही भक्ति है। भक्ति प्रेम का उदात्त स्वरूप है। भक्ति ज्ञान-प्राप्ति का साधन है, मन को सुधारने का सरल मार्ग है, प्रेम, आर्द्रता, विश्वास, निष्ठा आदि सभी मधुर भाव ईश्वर की ओर उन्मुख करने पर भक्ति की जा सकती है, जिससे जीवन पवित्र बन जाता है। सामी साहब ऐसी भक्ति करने की बात करते हैं, क्योंकि इसके बिना प्रभु को पा सकना कठिन है। अर्थात् सतगुरु की कृपा से ही ऐसी भक्ति प्राप्त हो सकती है और प्रभु के दर्शन किये जा सकते हैं।

भक्ति पदारथ तब मिलै, जब गुरु हो सहाय।
प्रेम प्रीति की भक्ति जो, पूरण भाग मिलाय।।
(कबीर)

■